NEWS18 मनी Powered by moneycontrol
भाषा चुनें हिन्दी | लाइव टीवी | ऐप डाउनलोड करें | हमें फॉलो करें
Trending Topics : #ukraine #pm-modi
होम देश मनी क्रिकेट मनोरंजन टेक फूड लाइफ नौकरी हेल्थ प्रदेश दुनिया राज्य/शहर चुनें लाइव टीवी
लेटेस्ट खबरें चुनाव अजब-गजब राशिफल ऑटो फोटो करियर धर्म साहित्य मिशन पानी Nerolac #CryptoKiSamajh Cryptocurrency netra SURAKSHA #ACKC
राज्यों का जनादेश उत्तर प्रदेश › पंजाब › उत्तराखण्ड › गोवा › मणि
HOME / NEWS / BUSINESS / THE ECONOMIC WELL BEING OF INDIAN WOMEN SEE IN THESE 5 CHARTS

विज्ञापन

International Women Day: भारतीय महिलाओं को मिलनी चाहिए ज्यादा वित्तीय आजादी

हर साल 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (International Women's Day) मनाया जाता है.

हर साल 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (International Women's Day) मनाया जाता है. हमें महिलाओं की तरक्की पर खुश तो होना चाहिए, लेकिन हमें ये भी देखना चाहिए कि महिलाओं की तरक्की की रफ्तार बेहद धीमी क्यों है?

NEWS18HINDI

LAST UPDATED : MARCH 08, 2022, 07:18 IST

WRITTEN BY : Malkhan Singh

विज्ञापन

फोटो

International Women's Day 2022: अनुष्का शर्मा से लेकर आलिया भट्ट तक, बॉलीवुड की 8 एक्ट्रेसेस जो बन गई हैं Producer

Women's Day : वो 06 देश जहां सही मायनों में महिलाएं हैं पुरुषों के बराबर

Russia-Ukraine War: रूस-यूक्रेन जंग के 13 दिन की 13 तस्वीरें, कमजोर दिल वाले बिल्कुल न देखें

और देखें

राशिभविष्य

मेष वृषभ मिथुन

प्रश्न पूछ सकते हैं या अपनी कुंडली बनवा सकते हैं ।

और भी पढ़ें ›

संबंधित खबरें

चंद राशि एकत्र कर खड़ा किया बिजनेस, आज ये 150 महिलायें कमाती हैं लाखों रुपये

नई दिल्ली. हर साल 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (International Women's Day) मनाया जाता है. इस दिन खुश होने और महिलाओं को विश (Wish) करने का मौका तो होता ही है, लेकिन इस दिन यह सोचना और ज्यादा जरूरी हो जाता है कि हम अपने समाज के भीतर झांकें और देखें कि कहां सुधार की संभावनाएं है.

पिछले कुछ दशकों में सुधार होने के बावजूद भारतीय महिलाओं की आर्थिक भलाई और वित्तीय स्वतंत्रता (Financial independence) एक दूर की कौड़ी बनी हुई है. इसमें समाज की जटिल संरचनाएं और सामाजिक बाधाएं लगातार बाधा बनती हैं. हमें महिलाओं की तरक्की पर खुश तो होना चाहिए, लेकिन हमें ये भी देखना चाहिए कि महिलाओं की तरक्की की रफ्तार बेहद धीमी क्यों है?

ये भी पढ़ें – Women's Day : तीन स्कीम में निवेश से महिलाओं को मिलेगी आर्थिक मजबूती

महिला दिवस पर बहू ने बुजुर्ग सास को लात-घूंसों से पीटा, बाल पकड़कर घसीटा

भारत की 5 ऐसी लेखिकाएं, जिन्होंने साहित्य के मायने बदल डाले

आईवीएफ ट्रीटमेंट से कैसे मिला मां बनने का सुख, पढ़ें कुछ महिलाओं के अनुभव

बिना पैसे के काम

भारतीय महिलाएं बेशक बड़ी-बड़ी कंपनियों में मुख्य भूमिका निभा रही हैं, लेकिन यदि ओवरऑल देखा जाए तो उनकी वर्कफोर्स में भागीदारी काफी कम है. बेहतर शिक्षा और अवसरों के बावजूद, पिछले तीन दशकों में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी (Women's workforce participation) में लगातार गिरावट देखी गई है. यह मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र द्वारा संचालित है, जहां यह लगभग आधी रह गई है. अर्थशास्त्री मिताली निकोर इसका श्रेय कृषि में मशीनीकरण और स्वचालन (Mechanisation and Automation) को देती हैं.

रूढ़िवादी मानदंड तय करते हैं कि महिलाएं काम पर जाने के बजाय बिना वेतन के घरेलू श्रम का बोझ उठाती रहें. 2019 के टाइम यूज सर्वे (Time Use Survey) से पता चला है कि पुरुषों के लिए 2.9 घंटे की तुलना में महिलाएं ऐसे काम पर दिन में 7 घंटे बिताती हैं. आश्चर्य नहीं कि महामारी ने महिला श्रमिकों को असमान रूप से हानि पहुंचाई है.

विज्ञापन

ये भी पढ़ें – इन 3 रंगों से है अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का खास नाता

यदि महिलाओं को ऐसे कर्तव्यों से मुक्त किए जाने पर ध्यान दिया जाए तो ये मददगार हो सकती है. निकोर सस्ती देखभाल सेवाओं को औपचारिक रूप देने और सुरक्षित गतिशीलता जैसे बुनियादी ढांचे के मुद्दों को हल करने में इसका समाधान देखती हैं. घटती श्रम भागीदारी न केवल महिलाओं, बल्कि अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर रही है. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान है कि महिलाओं की समानता से भारत की जीडीपी को 27% तक बढ़ सकती है.

टॉप पोजिशन पर महिलाएं कम

कॉर्पोरेट नेतृत्व के टॉप पोजिशन्स में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है. मिंट का एक एनालिसिस कहता है कि भारत की लिस्टेड कंपनियों में गैर-स्वतंत्र कार्यकारी निदेशकों में से केवल 9.6% महिलाएं हैं, जो 2014 में 5.4% थी. बढ़ोतरी है, मगर गति बेहद धीमी है. इस बढ़ोतरी का लगभग एक-चौथाई भाग बैंकिंग और फाइनेंस, और तेजी से बढ़ते उपभोक्ता सामान (Consumer goods) और हेल्थकेयर सेक्टर से आया.

सैलरी को लेकर भी असमंजस की स्थिति बनी हुई है. भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद में एक सहयोगी प्रोफेसर प्रोमिला अग्रवाल द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि महिलाओं के करियर में वृद्धि के रूप में वेतन का अंतर बढ़ता है. निचले पायदान पर महिलाएं पुरुषों की तुलना में 2.2% कम कमाती हैं, लेकिन कार्यकारी स्तर पर घाटा बढ़कर 6.1% हो जाता है. उन्होंने सुझाव दिया कि कंपनियों को वेतन प्रणालियों को फिर से डिजाइन करना चाहिए.

बिजनेस में नेतृत्व

जो महिलाएं उद्यमी हैं और खुद से ऊपर उठना चाहती हैं, उनके प्रति भी पूर्वाग्रह रहते हैं, जोकि प्रतिकूल असर डालते हैं. उनकी सीमित फाइनेंशियल एक्सेस उनकी प्रगति में सबसे बड़ी बाधक है. भले ही 2021 में पहले से अधिक महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप वैल्यूएशन में $1 बिलियन तक पहुंचे हैं, VCCEdge डेटा के अनुसार फिर भी भारत के 15% से कम यूनिकॉर्न बिजनेस महिलाओं द्वारा चलाए जाते हैं.

विज्ञापन

टॉप स्टोरीज

फ्रिजी हो गए हैं बाल तो इन आदतों में लाएं बदलाव

बिना पॉल्यूशन सर्टिफिकेट Petrol-Diesel देने पर हो सकती है 5 साल की सजा

नशा तस्करी में रोडवेज बस का ड्राइवर गिरफ्तार, हिमाचल से लेकर आता था चरस

Lock Upp में बेटियों को याद कर टूटे 'कैदी' करणवीर बोहरा, बोले- क्या वो मुझे...

अधिक पढ़ें

शुरुआती चरण की वेंचर कैपिटल (वीसी) फर्म 3one4 कैपिटल के निदेशक नृथ्या मडप्पा ने कहा, “यह निश्चित रूप से सप्लाई की बात नहीं है और हमने इसे स्पष्ट रूप से साबित कर दिया है. यह बात है कि हम कैसे व्यवस्थित रूप से प्रतिभाशाली महिलाओं को ऊपर उठने में सक्षम बनाते हैं.”

विज्ञापन

ये भी पढ़ें – भारत के प्रमुख 6 कानून, जिनके बारे में हर महिला को होनी चाहिए जानकारी

वित्तीय सशक्तिकरण

महिलाओं का वित्तीय समावेशन (Financial inclusion) आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और हाल के वर्षों में इसमें तेजी आई है. भारतीय रिज़र्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि व्यक्तिगत उधारकर्ताओं के बीच महिलाओं की हिस्सेदारी सितंबर 2021 तक 34.7% थी, जो पांच साल पहले 27.5% थी, जबकि कुल ऋण राशि में उनकी हिस्सेदारी 19.5% से बढ़कर 22.4% हो गई.

CareEdge की वरिष्ठ निदेशक रेवती कस्तूर ने कहा कि विकास के लिए मुख्य उत्प्रेरक मुख्य रूप से प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत महिलाओं को रियायती दरों पर क्रेडिट दिया गया है, और क्रेडिट में माइक्रोफाइनेंस की हिस्सेदारी बढ़ी है, जहां मुख्य ग्राहक महिलाओं के नेतृत्व वाले समूह हैं. उन्होंने कहा, “सामान्य तौर पर, महिला उधारकर्ताओं में बचत करने की प्रवृत्ति और ऋण चुकाने की इच्छा बहुत अधिक होती है.”

शेयर बाजार में महिला ट्रेडर्स की संख्या

अब पहले के मुकाबले अधिक महिलाएं शेयर बाजारों में काम कर रही हैं, जो परंपरागत रूप से पुरुषों का काम माना जाता रहा है. पूंजी बाजार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, और विश्लेषकों का अनुमान है कि अब व्यापारियों की जनजाति में महिलाएं लगभग 25-30% हैं. आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि 2019 के बाद से हर साल नई महिला निवेशकों की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है, मुख्य रूप से छोटे शहरों में. युवा महिलाएं (25-35 वर्ष की आयु) निवेश के रुझान का नेतृत्व कर रही हैं, क्योंकि महामारी ने निवेशकों के शेयर बाजारों में संक्रमण को उत्प्रेरित करने में मदद की है.

यूपी विधानसभा चुनाव 2022, ब्रेकिंग हिंदी न्यूज़, लाइव न्यूज अपडेट सबसे पहले **News18 India** पर। आज की ताजा खबरें, विश्लेषण, पांच राज्यों में **विधानसभा चुनाव** की खबरें पढ़ें सबसे विश्वसनीय **हिंदी न्यूज़** वेबसाइट News18 हिंदी पर |

Tags: Indian women, International Women Day

अगली ख़बर

ट्रेंडिंग टॉपिक

उत्तर प्रदेश चुनाव | Cricket News | मौसम का हाल
एग्जिट पोल | कोरोना वायरस | सोने के भाव

सोशल मीडिया

पीएम मोदी | रोहित शर्मा | कैटरीना कैफ
बिपिन रावत | विराट कोहली | चरणजीत सिंह चन्नी